PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

## अनुमान में व्याप्ति की भूमिका

→ अनुमान का आधार व्याप्ति है, अर्थात् बिना व्याप्ति के ज्ञान के अनुमान संभव नहीं। ~~इस प्रकार अनुमान में~~

→ नैयायिकों के मतानुसार अनुमान में व्याप्ति का कार्य तृतीय लिंग परामर्श का होता है अर्थात् व्याप्ति पक्ष, लिंग और साध्य को एक सूत्र में आबद्ध करती है। न्याय मतानुसार अनुमान के लिये पक्षधर्मता और व्याप्ति दोनों की आवश्यकता होती है। व्याप्ति से युक्त पक्षधर्मता ज्ञान को ही 'लिंग परामर्श' कहते हैं।

लिंग परामर्श में व्याप्ति के प्रकार को 'तृतीय लिंग परामर्श' कहते हैं क्योंकि इसमें तीन विभिन्न प्रकार से लिंग सम्बद्ध होता है- प्रथमतः, पक्ष के साथ लिंग सम्बद्ध होता है; यथा- पर्वत पर धूम है। द्वितीयतः, साध्य के साथ लिंग सम्बद्ध होता है; जैसे अग्नि में धूम है। तथा तृतीयतः, साध्य संयुक्त होकर लिंग पक्ष से सम्बद्ध होता है, ~~यथा~~ यथा— पर्वत पर अग्नियुक्त धूम है। व्याप्ति के इस व्यापार को 'व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञानम्' की संज्ञा भी दी जाती है।

→ वेदान्ती न्याय मत का विरोध करते हैं। इनके अनुसार अनुमिति ज्ञान के लिये पक्षधर्मता और व्याप्ति - ये दोनों पर्याप्त हैं। यहाँ तृतीय लिंग परामर्श या परामर्श की कोई आवश्यकता नहीं। वेदान्ती अपने इस मत के प्रमाणस्वरूप दैनिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति क्लेत-तप्त

Scanned with CamScanner

लोह देखता है तो तुरन्त ही वह ताप का अनुमान करता है; वहाँ लोह और ताप का संबंध सीधा ज्ञात होता है न कि लोह-लाल-ताप का संबंध ज्ञात होता है। अर्थात् वेदान्त मतानुसार लिंग का तीन स्थान पर संबद्ध होना आवश्यक नहीं।

→ प्रत्युत्तर में नैयायिक कहते हैं कि किसी भी प्रमाण में तीन चीजें पायी जाती हैं - करण, व्यापार और फल। अनुमान में पक्षधर्मता और व्याप्ति करण हैं, तृतीय लिंग परामर्श इसका व्यापार है तथा अनुमिति इसका फल है।

→ पाश्चात्य दार्शनिकों में ब्रैडले और मिल भी अनुमान में मध्य पद (लिंग) का सम्बन्ध पक्ष और साध्य (वृहत् और लघु पद) दोनों में बतलाते हैं तथा कहते हैं कि मध्य पद से लघुपद की तुलना के द्वारा ही निगमन के निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि से नैयायिकों का मत पाश्चात्य निगमनात्मक तर्कशास्त्र के नियमों के अधिक निकट प्रतीत होता है।

→ वस्तुतः वेदान्ती इस बात को स्वीकार नहीं करते कि अनुमिति ज्ञान में लघु वाक्य से निष्कर्ष पर सीधे बिना व्याप्ति की सहायता से आया जा सकता है, बल्कि वेदान्ती अनुमान के लिये पक्षधर्मता और व्याप्ति दोनों को अनिवार्य स्वीकार करता है। किन्तु वेदान्ती यहाँ मात्र एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुये कहते हैं कि साधारणतः दैनिक जीवन के अनुभव में हम इतनी जटिल प्रक्रिया में प्रवेश नहीं करते कि पक्ष को लिंग से सम्बद्ध करें, पुनः साध्य से लिंग को सम्बद्ध करें तदुपरान्त साध्य संयुक्त लिंग को पक्ष से संयुक्त करें।